AUS2A10a-hindoustani-2012-10-22-vermillon-curcuma-figue- banians

सिन्दूर Le vermillon sacré

सिन्दूर का हिन्दू धर्म और संस्कृति में बहुत महत्त्व माना जाता है। इसके बिना किसी भी पूजा-पाठ का काम पूरा नहीं होता। महादेव तथा हनुमान की पूजा करते समय उनकी मूर्ति पर सिन्दूर लगाया जाता है। तन्त्र, मंत्र तथा यंत्र की साधना भी सिन्दूर के बिना नहीं हो सकती। सामान्य जीवन में सिन्दूर को सुहाग और सौभाग्य का प्रतीक माना जाता है। शादी के समय अग्नि के सामने बैठकर दूल्हा सिन्दूर से ही दुल्हन की माँग भरता है। इस तरह माँग भरने की परंपरा प्राचीन काल से चला आ रही है। धार्मिक मान्यता है कि एक बार सिन्दूर से दुल्हन की माँग भर देने पर दूल्हा उसे कभी नहीं छोड़ सकता। सिन्दूर के बिना सुहागिन भी अधूरी मानी जाती है। इसीलिए भारत में शादी के बाद पत्नी अपनी माँग में सिन्दूर भरती है। माना जाता है कि सिन्दूर हर परिवार में सुख और संपत्ति लाता है।

हल्दी, हलदी Le curcuma

हल्दी भारतीय वनस्पति है। यह अदरक की तरह ५-६ फुट तक बढ़ने वाला पौधा है। इसकी जड़ की गाठों को सुखाया जाता है जिसमें हल्दी मिलती है। धार्मिक रूप से इसको बहुत शुभ माना जाता है। हर पूजा में इसका किसी-न-किसी रूप में उपयोग होता है। विवाह में तो हल्दी की रस्म का अपना एक विशेष महत्व है। शादी से पहले दूल्हा-दुल्हिन को कई दिनों तक हल्दी लगाने की परंपरा है। आयुर्वेद में हल्दी को एक दवाई बताया गया है। यह खून को साफ करती है। मधुमेह रोगियों के लिए उपयोगी है। लीवर संबंधी समस्याओं में भी इसे गुणकारी माना जाता है। यही वजह है कि सर्दी-खांसी होने पर दूध में कच्ची हल्दी का पाउडर डालकर पीने की सलाह दी जाती है। पेट में कीड़े होने पर 1 चम्मच हल्दी पाउडर रोज सुबह खाली पेट एक सप्ताह तक ताजा पानी के साथ लेने से कीड़े खत्म हो सकते हैं। खाँसी होने पर हल्दी की छोटी गाँठ मुँह में रख कर चूसना चाहिए। भारतीय रसोई में हल्दी का महत्वपूर्ण स्थान है। हल्दी पकवानों का स्वाद बढ़ाती है। हल्दी का उपयोग भारतीय खाने में मसालों के रूप में प्राचीन समय से किया जाता है। हल्दी का सबसे ज्यादा उपयोग दाल व सब्जी में किया जाता है।

पीपल L’arbre de figue

भारत, नेपाल, श्री लंका, चीन और इंडोनेशिया में पाया जाने वाला बरगद या गूलर की जाति का एक बड़ा पेड़ होता है जिसे भारतीय संस्कृति में महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। कई त्यौहारों पर इसकी पूजा की जाती है। पूजा करते समय इसके चारों ओर कच्चा सूत लपेटा जाता है। बौद्ध-धर्म में भी इसे पवित्र माना जाता है क्योंकि भगवान बुद्ध को पीपल के पेड़ के नीचे ही ज्ञान प्राप्त हुआ। भारतीय संस्कृति में पीपल देववृक्ष है। इसमें देवताओं का निवास माना जाता है। लोगों का मानना है कि पीपल का पेड़ लगाने से वंश की परम्परा कभी समाप्त नहीं होती। यह पेड़ सैकड़ों वर्षों तक खड़ा रहता है। पीपल की लकड़ी ईंधन के काम आती है लेकिन किसी इमारती काम के लिए अनुकूल नहीं होती। स्वास्थ्य के लिए भी पीपल को बहुत उपयोगी माना गया है। इसके फलों तथा पत्तों को दवाई का रुप में काम में लेते हैं।

बरगद L’arbre des banians

बरगद भारत का राष्ट्रीय वृक्ष है। बरगद को बर, बड़, बट, वट, वट वृक्ष भी कहते हैं। हिंदू लोग इस पेड़ को पूजनीय मानते हैं। इसके दर्शन, स्पर्श तथा सेवा करने से पाप दूर हो जाते हैं। ऐसा माना जाता है कि इस पेड़ को लगाने तथा इसकी जड़ में पानी देने से पुण्य होता है। इसकी शाखाओं से बरोह निकलकर ज़मीन पर पहुंचकर स्तंभ का रूप ले लेती हैं। इस पेड़ का विस्तार बहुत ज़ल्दी हो जाता है। भारत में बरगद के दो सबसे बड़े पेड़ कोलकाता के राजकीय उपवन में और महाराष्ट्र के ‘सतारा उपवन’ में हैं। लंका में एक बरगद का पेड़ है जिसमें 340 बड़े और 3000 छोटे - छोटे स्तंभ हैं। बरगद के फल पीपल के फल जैसे छोटे-छोटे होते हैं। इसकी लकड़ी नरम और छेदों वाली होती है इसलिए सिर्फ जलाने के काम में आती है। इसके पेड़ से सफेद रस निकलता है जिससे एक प्रकार का चिपचिपा पदार्थ तैयार होता है। इसके रस, छाल, और पत्तों से आयुर्वेद की दवाइयाँ बनती हैं। यह एक सदाबहार पेड़ है। इसकी जड़ें ज़मीन में दूर-दूर तक फैल जाती है। इसके पत्तों से दूध जैसा पदार्थ निकलता है। यह पेड़ त्रिमूर्ति का प्रतीक है। संतान-प्राप्ति के लिए लोग इसकी पूजा करते हैं। इसी कारण बरगद के पेड़ को काटा नहीं जाता। इस वृक्ष को अनश्वर या अक्षय माना जाता है।